कलीसिया के प्रति समर्पण

(3:1-13)

कई साल पहले, मारबल फाल्ज़, टैज़सस में रहते हुए मुझे सबसे समर्पित गोल्फर से भेंट करने का अवसर मिला। उसने हर रोज गोल्फ के आठ होल्स खेलने की आदत बना ली थी। हर रोज वह कई-कई घण्टे अज़्यास करता था। वह अपने खेल के निश्चित पहलुओं को टारगेट करने के लिए बड़ी सावधानी से योजना बनाकर अज़्यास करता था। एक दिन वह अपने दृष्टिकोण से काम करता। अगले दिन वह अज़्यास के लिए दो सौ शॉट तक लगाता। वह गोल्फ के प्रति पूरी तरह समर्पित था।

बहुत से लोग इस आदमी को जो मुझे मारबल फाल्ज़ में मिला था टूयरिंग प्रोफेशनल टॉम काइट के नाम से जानते हैं। उसने बीस से अधिक वर्ष तक कई प्रोफेशनल गोल्फ टूर्नामेंटों में भाग लिया है। हर बार उसे नकद इनाम मिलता था, जिस कारण उसने अपने प्रयासों से 80 लाख डॉलर जीत लिए। उसकी सफलता का कारण खेल के प्रति उसके समर्पण को कहा जा सकता है।

लोग उस बात के प्रति समर्पित होते हैं, जो सचमुच उनके लिए महत्वपूर्ण होती है। यह बात परिवार, काम, शौक या दस्तकारी कुछ भी हो सकती है। कुछ लोग किसी उद्देश्य, नागरिक संगठन या राजनैतिक पार्टियों के प्रति समर्पण दिखाते हैं। जो भी हो, किसी चीज़ के लिए हमारे समर्पण से पता चलता है कि हमारी दृष्टि में उसका कितना महत्व है।

यही सिद्धांत मसीही लोगों और स्थानीय कलीसियाओं के साथ उनके सज़्बन्धों में भी लागू होता है। *मण्डली के प्रति हमारे समर्पण से पता चलता है कि हमारी नज़र में उस कलीसिया का कितना महत्व है।*

आप स्थानीय कलीसिया को कितना महत्व देते हैं? जॉर्ज बरना की जो विभिन्न साज़्प्रदायिक कलीसियाओं में कई प्रकार का अध्ययन करते हैं, हाल ही की रिपोर्ट है कि ''लोगों को स्थानीय कलीसिया का भाग बनने के बजाय परमेश्वर के साथ निकट सज़्बन्ध बनाना अधिक सही लगता है।''[1] अन्य शज़्दों में, आज लोग परमेश्वर को अपने जीवन में स्थान देना चाहते हैं, परन्तु स्थानीय कलीसियाओं में सक्रिय होने की उनकी कोई इच्छा नहीं होती है। बरना के अध्ययन की खोज से पता चलता है कि लगभग आधे वयस्क लोग स्थानीय कलीसिया का अभिन्न अंग बनने की भावना नहीं रखते।

पिछले दशक में कलीसियाओं के प्रति लोगों का समर्पण कम हुआ है। वे कलीसियाओं को अपना आप, अपना समय और अपना धन कम से कम देना चाहते हैं। हाल ही में, गैलप संगठन ने उच्च मध्यम वर्ग अमेरिकी लोगों पर जो दावा करते थे कि उनके जीवन में

परमेश्वर सबसे ऊपर है, एक अध्ययन किया है। रिपोर्ट से पता चलता है कि ये लोग अपने धन का केवल 1.5 प्रतिशत ही उन कलीसियाओं को, जिनके वे सदस्य हैं, देते हैं जबकि अपनी आमदनी का 12 प्रतिशत भाग विलासिता की वस्तुओं पर खर्च करते हैं।[2]

इन आंकड़ों से पता चलता है कि हमारी बात सच है। कलीसिया को दिए जाने वाले हमारे समय, ऊर्जा और धन से पता चलता है कि हमारी दृष्टि में कलीसिया का कितना महत्व है।

इससे यह भी पता चलता है कि पवित्र शास्त्र का हमारा यह भाग इतना सटीक ज़्यों है। अध्याय 3 में पौलुस ने उस कलीसिया के सज़्बन्ध में जिसे अपने आप की फिर से जांच करने की आवश्यकता है, प्रकाशन दिया है। उसकी बातों से हमें प्रभु की कलीसिया के हमारे समर्पण पर फिर से विचार करने का अवसर मिलना चाहिए।

कलीसिया की प्रकृति को समझने से इसके प्रति हमारा समर्पण बढ़ता है

3:1 में पौलुस ने एक प्रार्थना के साथ आरज़्भ किया, परन्तु फिर वह पथ से हट गया। आयत 14 तक प्रार्थना फिर आरज़्भ नहीं होती, लेकिन 1 और 14 के बीच की आयतों से हमें यह स्पष्ट देखने में सहायता मिलती है कि कलीसिया ज़्या है। पौलुस ने इफिसुस के लोगों को पहले कलीसिया की प्रकृति का ध्यान दिलाया:

> इसी कारण मैं पौलुस जो तुम अन्यजातियों के लिए मसीह यीशु का बन्धुआ हूं-यदि तुम ने परमेश्वर के उस अनुग्रह के प्रबन्ध का समाचार सुना हो, जो तुज़्हारे लिए मुझे दिया गया। अर्थात यह, कि वह भेद मुझ पर प्रकाश के द्वारा प्रगट हुआ, जैसे मैं पहिले संक्षेप में लिख चुका हूं। जिस से तुम पढ़कर जान सकते हो, कि मैं मसीह का वह भेद कहां तक समझता हूं। जो और और समयों में मनुष्यों की सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था, जैसा कि आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यवज़्ताओं पर प्रकट किया गया है। अर्थात यह, कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा अन्यजातीय लोग मीरास में साझी, और एक ही देह के और प्रतिज़्ञा के भागी हैं (3:1-6)।

पौलुस ने कलीसिया को एक ''भेद'' कहा। भेद या रहस्य का विचार आने पर हमारा ध्यान अज़्सर रहस्यपूर्ण पुस्तकों या फिल्मों की ओर जाता है। भेद को हम रहस्य, अज़्ञात या अनसुलझी बात से जोड़ते हैं।

पौलुस द्वारा इस्तेमाल की गई भाषा में ''भेद'' (यू.: *musterion*) का अर्थ कुछ और है। यहां भेद उस सच्चाई को कहा गया है, जिसे मनुष्य अपने आप खोज नहीं सकते थे, परन्तु यदि परमेश्वर उसे प्रकट करे तो वे उसे जान सकते हैं। यदि परमेश्वर ऐसी सच्चाइयों को प्रकट न करता, तो किसी में भी उन्हें जानने की क्षमता न होती।

हाल ही में, संसार भर के खगोल शास्त्रियों की नज़रें शज़्तिशाली दूरबीनों पर लगी हुई

थीं, जब धूमकेतु के टुकड़े बृहस्पति के धरातल में फंस गए थे। वैज्ञानिक तकनीक से आज के लोग इस घटना के साक्षी बन पाए जो पिछली पीढ़ियों के लिए सज़्भव नहीं था। वैज्ञानिक लोग आज हाल ही की वैज्ञानिक उन्नति के कारण किसी दूरवर्ती ग्रह के बारे में तथ्यों को जान सकते हैं, जो प्राचीन लोगों के लिए सज़्भव नहीं था।

परन्तु पौलुस के ध्यान में वह ज्ञान था, जो अपनी कोशिश से खोज करने की हमारी क्षमता से कहीं बढ़कर है। संसार के बड़े-बड़े बुद्धिजीवियों को जिनमें अरस्तु, प्लेटो, डा विंसी, आइनस्टाइन जैसे लोग शामिल हैं, को इकट्ठे करें तो भी वे मसीह के भेद की खोज या उसकी व्याज़्या नहीं कर पाएंगे। इस भेद को केवल तभी जाना जा सकता है जब परमेश्वर प्रकाशन के द्वारा बताना चाहता हो।

यह भेद ज़्या है ? सबसे बढ़कर इसका सज़्बन्ध कलीसिया से और विशेषकर कलीसिया की प्रकृति से है, ''जिसकी कल्पना पहले कभी नहीं की गई थी।'' पौलुस ने तीन विवरण दिए हैं।

1. कलीसिया में *''अन्यजाति लोग'' इस्राएल के साथ ''संगी अधिकारी हैं।''* परमेश्वर अपनी कलीसिया को किसी एक संगठन या एक तरह के लोगों के लिए नहीं रखता। वह सब को भाग लेने का निमन्त्रण देता है।

2. कलीसिया के लोग *''देह के अंग''* हैं। कलीसिया वहीं है, जहां हम मसीह के साथ मिल जाते और जहां लोगों को अलग करने वाली सब दीवारें गिर जाती हैं।

3. कलीसिया में, लोग *''मसीह यीशु में प्रतिज्ञा के भागी''* बनते हैं। कलीसिया में कुछ क्रांतिकारी बात होती है। सब लोग परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में बराबर के भागीदार होते हैं। कलीसिया में कोई उच्च, मध्यम या निज़्न वर्ग का व्यज़्ति नहीं होता। मसीह में कोई भी किसी प्रतिज्ञा से वंचित नहीं रहता। कलीसिया में या मसीह में किसी प्रकार की प्रथम श्रेणी या द्वितीय श्रेणी की नागरिकता नहीं है।

संसार से यह कितनी अद्‌भुत विदायगी है! हर देश, हर कौम, हर राज्य, हर नगर में भेदभाव होता है। हर जगह सुविधा सज़्पन्न और सुविधाओं से वंचित, वांछनीय और अवांछनीय, प्रसिद्ध और गुमनाम, अपेक्षित और अनापेक्षित लोग होते हैं। हमारा संसार ऐसा ही है।

पौलुस ने कहा, ''कलीसिया में ऐसा नहीं है।'' परमेश्वर ने एक नई मनुष्यता बनाई है। इसमें सब लोग सुविधा सज़्पन्न हैं। सब लोगों को परमेश्वर के लोग बनाया गया है। सबका महत्व है। परमेश्वर के लिए सब विशेष और बहुमूल्य हैं।

ऐसा केवल परमेश्वर ही कर सकता था। केवल परमेश्वर ही हर प्रकार के लोगों को एक देह में इकट्ठे कर सकता था। स्वार्थ, घृणा और पूर्व धारणा के माहौल में पले लोगों को प्रेम करने और एक दूसरे की सेवा करने के लिए सिखाने को केवल परमेश्वर ही बुला सकता है। यही भेद है। और यही कलीसिया है।

प्रभु की कलीसिया की सुन्दर एवं विलक्षण प्रकृति को समझकर, इसके प्रति हमारी श्रद्धा या समर्पण बढ़ जाता है।

कलीसिया के काम को देखकर इसके प्रति हमारा समर्पण बढ़ता है

ध्यान दें कि 3:7–10 में पौलुस ने कलीसिया के भेद के बारे में ज़्या कहा है:

> और मैं परमेश्वर के अनुग्रह के उस दान के अनुसार, जो उसकी सामर्थ के प्रभाव के अनुसार मुझे दिया गया, उस सुसमाचार का सेवक बना। मुझ पर जो सब पवित्र लोगों में से छोटे से भी छोटा हूं, यह अनुग्रह हुआ, कि मैं अन्यजातियों को मसीह के अगज़्य धन का सुसमाचार सुनाऊं। और सब पर यह बात प्रकाशित करूं, कि उस भेद का प्रबन्ध ज़्या है, जो सब के सृजनहार परमेश्वर में अति से गुप्त था। ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में हैं प्रगट किया जाए।

कलीसिया का काम ज़्या है ? पौलुस ने कहा कि इसका काम सुसमाचार के संचार में परमेश्वर के साथ हमारी भागीदारी है। उसकी बातों से हमें संचार के शानदार चक्र को समझने में सहायता मिलती है।

परमेश्वर ने कलीसिया के आरज़्भ होने पर, विशेष संदेशवाहकों को सुसमाचार का सीधा प्रकाशन दिया था। पौलुस तथा अन्य प्रेरितों और भविष्यवज़्ताओं को इस काम के लिए परमेश्वर द्वारा चुना गया था। पौलुस ने अपने आप को ''परमेश्वर के अनुग्रह के उस दान के अनुसार, जो उसकी सामर्थ के प्रभाव के अनुसार मुझे दिया गया, उस सुसमाचार का सेवक'' के रूप में देखा (आयत 7)। पौलुस का संदेश अपना नहीं था। यह संदेश उसे परमेश्वर की ओर से मिला था। परमेश्वर ने पौलुस को अपने विशेष संदेशवाहकों में चुना, जिन्हें कलीसिया के बढ़ने के प्रारज़्भिक चरणों के दौरान परमेश्वर से सीधे प्रकाशन मिलते थे।

परमेश्वर से विशेष प्रकाशन पाने वाले लोग दूसरों में सुसमाचार का प्रचार करते थे। पौलुस ने दूसरों तक सुसमाचार मौखिक रूप से पहुंचाया। परमेश्वर ने उसे ''अन्यजातियों को मसीह के अगज़्य धन का सुसमाचार'' सुनाने के लिए इस्तेमाल किया (आयत 8)। परमेश्वर ने मनुष्यजाति को संदेश देने के लिए मनुष्यों को इस्तेमाल किया। यह भी परमेश्वर की योजना ही है।

परमेश्वर स्वर्ग के स्वर्गदूतों पर सुसमाचार प्रकट करता है। ''ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में हैं प्रगट किया जाए'' (आयत 10)। कलीसिया मनुष्यता की बिल्कुल नई जाति है। इससे पहले इसके जैसी कोई जाति नहीं थी। परमेश्वर इस नई जाति के द्वारा अर्थात जीवन के हर क्षेत्र से आए लोगों के द्वारा, जिन्हें मसीह में लाया गया है, स्वर्ग की सेनाओं के लिए एक ईश्वरीय नाटक दिखाता है।

हम कलीसिया के बारे में इतना जानते हैं कि इसकी सामर्थ और सुन्दरता को समझने में नाकाम रहते हैं। हम ईश्वरीय नाटक और परमेश्वर की हलचल को देख नहीं पाते हैं। रविवार के दिन एक और बालक के परमेश्वर के घर आने पर स्वर्गदूत आनंद से उज़ेजित

हो जाते हैं। आपके परिवार के लोगों द्वारा दूसरों के साथ परमेश्वर की आराधना के लिए इकट्ठा होने पर स्वर्गदूत आनन्द मनाते हैं। हम यह सब असाधारण रीति से होते हुए देखते हैं। हमारे लिए यह कलीसियाई जीवन का केवल एक और भाग है। परन्तु परमेश्वर की महिमा करने वाला कलीसिया का कोई भी काम साधारण, सरल और नीरस नहीं है। हकीकत में, यह इतनी लुभावनी है कि स्वर्गदूतों की भी समझ से बाहर है कि परमेश्वर अपनी कलीसिया के द्वारा लोगों के साथ ज़्या कर रहा है।

यदि वह ईश्वरीय नाटक थोड़ा सा भी हमारी समझ में आ जाए, जिसके उसने हमें भाग बनाया है तो हम आराधना में जाने को नज़रअंदाज करने या छोड़ने की बात सोच भी नहीं सकते। यदि हम समझ पाएं कि परमेश्वर अपनी कलीसिया के साथ ज़्या कर रहा है तो हम स्थानीय मण्डली को बनाने के लिए अपना समय और ऊर्जा प्रसन्नता से देंगे।

कलीसिया की केन्द्रीयता को समझकर इसके प्रति हमारा समर्पण बढ़ता है

फिर से ध्यान दें कि पौलुस ने 10 और 11 आयतों में ज़्या कहा है: ''ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर, जो स्वर्गीय स्थानों में हैं, प्रगट किया जाए। उस सनातन मंशा के अनुसार, जो उस ने हमारे प्रभु यीशु में की थी।''

आज लोग परमेश्वर के साथ निजी सज़्बन्ध बनाने पर बहुत ज़ोर देते हैं। बहुत से लोग परमेश्वर के साथ तो सज़्बन्ध बनाना चाहते हैं, लेकिन कलीसिया के साथ कोई सज़्बन्ध रखना नहीं चाहते। पौलुस के शज़्द हमें यह याद दिलाने के लिए हैं कि परमेश्वर की सनातन मंशा में कलीसिया का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है। कलीसिया खाने के मेज़ पर अतिरिज़्त डिशों की तरह नहीं है अर्थात इसके कार्य मुज़्य कार्य हैं।

जॉन स्टॉट ने कलीसिया की केन्द्रीयता पर चर्चा की है[3] पहले तो, उसने कहा कि *कलीसिया इतिहास के लिए केन्द्रीय है।* वास्तव में, इतिहास, ''उसकी कहानी'' अर्थात परमेश्वर की कहानी ही है। बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर की योजना में यीशु द्वारा अपने छुड़ाए हुए और अपने साथ मिलाए गए लोगों के साथ होने को प्रमुखता दी गई है। परमेश्वर इन्हीं और केवल इन्हीं लोगों के साथ यह घोषणा करता है: ''तुम पहिले तो कुछ भी नहीं थे, पर अब परमेश्वर की प्रजा हो'' (1 पतरस 2:10)।

दूसरा, *कलीसिया सुसमाचार के लिए प्रमुख है।* इफिसियों को कहे गए पौलुस के शज़्द हमें याद दिलाने के लिए हैं कि सज़्पूर्ण सुसमाचार में मसीह का प्रचार और कलीसिया का भेद है। यीशु ने कलीसिया से इतना प्रेम किया कि उसने ''अपने आप को उसके लिए दे दिया'' (5:25)। यीशु की नज़र में कलीसिया का महत्व इतना अधिक है कि हम उसे शज़्दों में नहीं बता सकते। वह चाहता है कि हम भी इसे उतना ही महत्व दें।

तीसरा, *कलीसिया मसीही जीवन के लिए प्रमुख है।* पवित्र शास्त्र का हमारा भाग पौलुस द्वारा अपनी बलिदानपूर्वक सेवाओं का वर्णन करने के साथ समाप्त होता है: ''इसलिए

मैं बिनती करता हूं कि उनके कारण हियाव न छोड़ो, ज़्योंकि उनमें तुज़्हारी महिमा है'' (3:13)। पौलुस मसीह के काम को बढ़ाने तथा कलीसिया को महिमा दिलाने के लिए कुछ भी कीमत देने को तैयार था।

कलीसिया सज़्पूर्ण नहीं है। न तो मेरे नगर की मण्डली सज़्पूर्ण है, न आपके नगर की। परन्तु इससे परमेश्वर के मन में कलीसिया का महत्व कम नहीं हो जाता। परमेश्वर हमें यही तो समझाना चाहता है। वह हमसे पौलुस के शज़्दों के द्वारा कहता है, ''मेरी कलीसिया को कम न जानो। इसे वही महत्व दो जो इसका है, अर्थात इसे मेरी तेजस्वी कलीसिया मानो। यह उन लोगों तथा कार्य का प्रतिनिधित्व करती है, जिसके लिए मैं चाहता हूं कि तुम अपना सच्चा समर्पण दिखाओ।''

सारांश

फिल्में, खेल या सैर सब एक दिन बंद हो जाएंगी। कोई कैरियर, घर या सज़्पज़ि नहीं रहेगी। सब कुछ जाता रहेगा। यह संसार उन सब चीज़ों के साथ जो इसमें हैं, खत्म हो जाएगा।

मैं और आप परमेश्वर के सामने खड़े होंगे और वह हमें याद कराएगा कि हम उसकी कलीसिया के प्रति कितने समर्पित थे। वह याद कराएगा कि हम कलीसिया को बनाने के लिए कितने समर्पित थे। यदि हम कलीसिया की उपेक्षा करते हैं तो परमेश्वर को अपने समर्पण की कमी का ज़्या जवाब देंगे? यदि परमेश्वर हमसे पूछे, ''तुज़्हारी नज़र में मेरी कलीसिया का महत्व ज़्यों नहीं था?'' तो हम ज़्या जवाब देंगे।

मैं नहीं चाहता कि मुझसे यह प्रश्न पूछा जाए। हम में से कोई भी नहीं चाहेगा। आइए जो भी बदलाव लाने की आवश्यकता हो, हम वह बदलाव अपने जीवन में लाएं। आइए उन चीज़ों को प्राथमिकता दें, जिन्हें प्राथमिकता देनी चाहिए। प्रभु की कलीसिया में समर्पित हो जाएं।

टिप्पणियां

[1]जॉर्ज बरना, *द बरना रिपोर्ट: व्हट अमेरिकन्स बिलीव: एन एनुअल सर्वे ऑफ़ वैल्यूज़ एण्ड रिलिजियस व्यूज़ इन द यूनाइटेड स्टेट्स* (वैंचुरा, कैलिफोर्निया: रीगल बुज़्स, 1991), 167. [2]ऐलन सैंटिली वॉन के साथ चार्ल्स कोल्सन, *द बॉडी: बीइंग लाइट इन द डार्कनेस* (डैलस, टैज़्सस: वर्ड पज़्लिशिंग, 1992), 31. [3]जॉन आर. डज़्ल्यू स्टॉट, *द मैसेज ऑफ़ इफिसियंस:* गॉड'स न्यू सोसायटी, द बाइबल स्पीज़्स टुडे, सामा. संस्क. जॉन आर. डज़्ल्यू स्टॉट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर वर्सिटी प्रैस, 1979), 126-30.